प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा*

एन.सी.ई.आर.टी.

पूर्व-बाल्यावस्था हमारे जीवन की ऐसी अवस्था है जिसमें हमारे जीवन के आगे के विकास की नींव रखी जाती है, यहीं से हममें विभिन्न आदतों, संस्कारों, कौशलों तथा ज्ञान लेने की क्षमता के संवर्धन की शुरुआत होती है। परंतु आज इस अवस्था के बच्चों की शिक्षा और देखभाल के संबंध में हमारे देश में तमाम चुनौतियाँ तथा सरोकार सामने आ रहे हैं। बड़ी बात यह भी है कि हममें से बहुत-से लोग इन सरोकारों के विषय में जानकारी नहीं रखते हैं और इसलिए एक शिक्षक, एक अभिभावक के रूप में इस अवस्था के बच्चों की विकास संबंधी आवश्यकताएँ समझे बिना ही देखभाल और शिक्षा अन्य अवस्था के बच्चों की तरह ही करना आरंभ कर देते हैं। जिसका नतीजा यह होता है कि यह कोमल अवस्था उन बड़े-बड़े थपेड़ों को नहीं सह पाती और फिर धीरे-धीरे बच्चों में पढ़ने की रुचि और सीखने का आनंद कम होता जाता है। अवधारणाओं की पकड़ मज़बूत नहीं हो पाती। यही नहीं शारीरिक और भावनात्मक विकास भी बुरी तरह से प्रभावित हो जाता है। इसी संदर्भ में इस अंक में आप तक इस विषय से संबंधित जानकारी पहुँचाने का प्रयत्न किया गया है। निम्न चुनिंदा उद्धरण पूर्व-बाल्यावस्था शिक्षा विषय पर बनाए गए राष्ट्रीय फोकस समूह के आधार पत्र से लिए हैं। इनमें इस अवस्था की शिक्षा के सामान्य उद्देश्य व उन्हें पाने के लिए प्रस्तावित पाठ्यचर्या की रूपरेखा के लिए व्यापक दिशा निर्देशों की चर्चा की गयी है। फोकस समूह का संपूर्ण आधार पत्र एन.सी.ई.आर.टी. की वेबसाइट ncert.nic.in **पर उपलब्ध है।**

1. पाठ्यचर्या की रूपरेखा के लिए दिशा-निर्देश

जीवन की इस अवधि के महत्त्व और बालक के समग्र और सर्वांगीण विकास और वृद्धि को सुनिश्चित करने वाली पाठ्यचर्या के कुछ व्यापक सिद्धांतों का निर्धारण किया गया है, जो एक उपयुक्त पाठ्यचर्या ढाँचे को रेखांकित करते हैं। ये सुझाव हैं जिन्हें आदेश नहीं समझना चाहिए।

पाठ्यचर्या बच्चे को उपलब्ध समस्त अनुभवों का सार है तथा इसे पाठ्यक्रम के रूप में घटाया नहीं जा सकता। इसे विभिन्न संदर्भों में बच्चे के लिए उपयुक्त, बच्चे की आयु के

** राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, 'प्रारंभिक बाल्यवस्था शिक्षा'* राष्ट्रीय फ़ोकस समूह आधार पत्र, एन.सी.ई.आर.टी. नयी दिल्ली 2010, के चुनिंदा अंश (पृष्ठ संख्या-37-52)

अनुकूल, आवश्यकताओं और योग्यताओं के अनुरूप तैयार किया जाना चाहिए। इसमें शिक्षकों की पूर्ण सहभागिता की आवश्यकता है। शिक्षक की सहभागिता इसे बनाने और कक्षा में इसे व्यक्त करने दोनों प्रकार से है। इस बात पर भी पुनः बल देना आवश्यक है कि पाठ्यचर्या नीरस, अर्थहीन और प्रायः निष्ठुरतापूर्ण कार्यक्रम में बाधा नहीं होनी चाहिए, जो आज स्कूल-पूर्व शिक्षा के लिए पारित की जाती है जिसमें बच्चे सर्वाधिक अनुपयुक्त बातें करने के लिए मजबूर होते हैं। बच्चे में सीखने की नैसर्गिक इच्छा होती है। आजकल प्रायः जो किया जा रहा है उससे बच्चे की अधिक-से-अधिक सीखने की इच्छा का नाश हो रहा है। साथ ही बच्चे के आत्मविश्वास और आत्ममूल्य भी नष्ट हो रहे हैं जिसके परिणामस्वरूप शैक्षणिक प्रदर्शन असंतोषजनक हो रहा है तथा आगे चलकर स्कूल छोड़ने की घटनाएँ हो रही हैं।

1.1 शिक्षाशास्त्रीय प्रक्रियाएँ

ई.सी.सी.ई. के सामान्य उद्देश्यों को निम्नानुसार बताया जा सकता है–

(क) बच्चे को उसकी अधिकतम क्षमता का विकास करने में समर्थ बनाकर भविष्य में एक स्वस्थ, उत्पादक और संतुष्ट जीवन का आधार तैयार करना,

(ख) प्राथमिक स्कूल में प्रवेश और सफलता के लिए बच्चे को तैयार करना, और

(ग) महिलाओं और बालिकाओं को सहायक सेवाएँ प्रदान करना ताकि वे अपनी शिक्षा, प्रशिक्षण जारी रख सकें और कार्य बल का भाग बन सकें।

इन लक्ष्यों को पाने के लिए पाठ्यचर्या निम्न प्रकार से होनी चाहिए–

- विकासात्मक रूप से उपयुक्त कार्यकलाप आधारित तथा बच्चे की आयु और उसकी आवश्यकता के अनुसार, बच्चे की रुचियों तथा क्षमता से जुड़ी हुई।
- स्वास्थ्य और कल्याण, समझ, शारीरिक, सामाजिक, संवदेनशील तथा भाषा जैसे सभी क्षेत्रों में अंतर्संबंधी दृष्टिकोण के माध्यम से सर्वांगीण वृद्धि और विकास की पुष्टि करने के लिए अनुभवों का एकीकृत सेट।
- हमारे देश के विविध सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और भाषायी संदर्भों, साथ-ही-साथ बच्चों के बीच मौजूद वैयक्तिक अंतरों के अनुरूप पर्याप्त लचीलापन।
- बच्चे को प्राथमिक स्कूल की दिनचर्या तथा औपचारिक शिक्षण के प्रति सहज बनाने में सहयोगी।

1.2 पाठ्यचर्या की रूपरेखा के मूलभूत सिद्धांत

चिंतकों ने शुरू से ही बाल्यावस्था की प्रकृति और समाजीकरण की प्रक्रिया के संबंध में अनुमान लगाए हैं। प्लेटो का विचार कि छोटे बच्चों को राज्य द्वारा चलाए जाने वाले स्कूलों में मार्गदर्शन दिया जाना चाहिए, उनके अपने समय में उतना ही उग्र और अस्वीकार्य था जितने शताब्दियों बाद गांधी के शिल्प आधारित बुनियादी शिक्षा के विचार थे। पश्चिमी चिंतक जैसे रूसो, फ्रोबेल, डीवी, माँटेसरी और अन्य प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के संचालन को दिशा प्रदान करने में अग्रणी रहे हैं। उनके विचारों ने पाठ्यचर्या विषय-वस्तु

के निर्माण के लिए इंद्रिगत और व्यावहारिक गतिविधियों का मार्ग प्रशस्त किया। इन लोगों के आग्रह और अंतर्दृष्टि के आधार पर कक्षा की गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी-खेल, कला, लय, कविता और सक्रिय सहभागिता का समावेश हुआ और मान्यता मिली। हमारे देश के चिंतकों-ने छोटे बच्चों के व्यवहार के अवलोकन से तथा विभिन्न सामग्रियों का प्रयोग करने की गतिविधियों में बच्चों की रुचि से प्रेरणा पाई है। गाँधी, टैगोर, गिजुभाई बधेका तथा ताराबाई मोदाक उन शुरुआती लोगों में से थे जिन्होंने छोटे बच्चों की देखरेख और शिक्षा के लिए एक बाल-केंद्रित दृष्टिकोण की सर्वप्रथम संकल्पना की थी।

हाल ही के समय में, प्याजे, ब्रूनर और वायोगोत्सकी जैसे विकासात्मक मनोविज्ञान तथा बाल विकास के विद्वानों ने अनुसंधान के आधार पर खेल और कार्यकलाप को बच्चे के सीखने के नैसर्गिक तरीके के रूप में महत्त्व प्रदान किया है। इन कार्यकर्ताओं और चिंतको की अंतदृष्टि और दर्शन के आधार पर हम अब यह जानते हैं कि ऐसे कार्यक्रम, सीखने के पैटर्न की समझ और कार्यकर्ताओं और चिंतकों की अंतर्दृष्टि और दर्शन के आधार पर बनने चाहिए। बाल्यावस्था की अनिवार्य प्रकृति को पारिभाषित करने वाले सीखने के पैटर्नों पर आधारित होने चाहिए। ई.सी. सी.ई. के शिक्षकों को निम्नलिखित सिद्धांतों की समझ होनी चाहिए–

- सीखने का आधार खेल हो
- शिक्षा का आधार कला हो
- बच्चे की सोच की विशिष्ट विशेषताओं को मान्यता देना
- मूलपाठ (मूलभूत साक्षरता और अंक ज्ञान) और संस्कृति का मिश्रण
- औपचारिक तथा अनौपचारिक क्रियाओं का मिश्रण
- दैनिक सामंजस्य में घनिष्ठता और चुनौती
- विशेषज्ञता के स्थान पर अनुभव को प्राथमिकता
- विकास की दृष्टि से उपयुक्त व्यवहार और लचीलापन
- स्थानीय सामग्री, कला और ज्ञान का प्रयोग
- स्वास्थ्य, कल्याण और स्वस्थ आदतों का एकीकरण

इन सिद्धांतों के क्रियान्वयन की विस्तारपूर्वक व्याख्या करने से पूर्व निम्नलिखित बातों पर हल्की नज़र डालना लाभप्रद होगा–

(अ) विकास के विभिन्न क्षेत्र

(ब) विभिन्न आयु के बच्चों की विकासात्मक विशेषताएँ

(स) बच्चे के सीखने की आवश्यकताओं की प्रकृति

(अ) विकास के विभिन्न क्षेत्र

इन्हें निम्न प्रकार से श्रेणीबद्ध किया जा सकता है–

- संज्ञानात्मक क्षेत्र
- इंद्रिगत क्षेत्र
- बोधात्मक क्षेत्र
- भाषा क्षेत्र
- भावात्मक/संवेदी
- सामाजिक क्षेत्र
- वैयक्तिक क्षेत्र

प्रत्येक क्षेत्र के भीतर विभिन्न कौशलों का विकास एक सतत् प्रक्रिया है तथा वृद्धि के बारे में विस्तृत जानकारी बाल विकास पर मानक पुस्तकों तथा शिक्षक नियमावली[1] में प्राप्त की जा सकती है।

विकास के सभी क्षेत्र जुड़े हैं। बच्चे का शिक्षण केवल संकुचित रूप से परिभाषित विषय क्षेत्रों में नहीं होता। विकास और शिक्षण आपस में संबंधित हैं। कोई गतिविधि यदि एक आयाम को उत्प्रेरित करती है, वह दूसरे आयामों को भी अवश्य प्रभावित करती है।

उदाहरण के लिए, कक्षा में कहानी सुनाना। तीन वर्ष का बच्चा बहुत ही छोटी कहानी सुनेगा। उनकी रुचि कठपुतली के खेल, शब्दों या कविता के माध्यम से बनाए रखी जा सकती है। कहानियाँ भी बच्चों को घटनाक्रम को समझने, उनके अपने भावों को जाहिर करने और भाषा पर ध्यान केंद्रित करने में सहायता करती है। उनमें सुनने की कला को आत्मसात् कराने से बालक क्षमता हासिल करेंगे। उनके शब्द भंडार का विस्तार होगा, उनकी समझ में वृद्धि होगी।

उत्कृष्ट प्रेरक कौशलों के स्तर पर, जेसल के मानदंड बच्चों की परिवर्तित होने वाली क्षमताओं की व्याख्या करते हैं। उदाहरण के लिए, तीन वर्ष का बच्चा एक वृत्त अथवा सीधी रेखा की नकल करता है जबकि चार वर्ष का बच्चा एक क्रॉस की नकल कर लेता है और पाँच वर्ष का बच्चा एक डायमंड अथवा त्रिभुज और प्रिज़्म तक की नकल कर लेता है। इस समझ के आधार पर, बालक को पैटर्न चित्रकला या ऐसी किसी गतिविधि में लगाया जा सकता है जो लिखने की तैयारी को प्रोत्साहित करती हो।

(ब) विभिन्न आयु के बच्चों की विकासात्मक विशेषताएँ

शिशु और टॉडलर्स (0–2+)

शिशु और टॉडलर्स सामाजिक रूप से प्रतिक्रियाशील वयस्कों के बीच अपनी इंद्रियों (देखने, सुनने, चखने, सूँघने और महसूस करने) के माध्यम से वातावरण का अनुभव करने और शारीरिक रूप से आगे-पीछे जाने के माध्यम सीखते हैं। शिशु, जो चंचल नहीं हैं, वे भी अपने आस-पास के विश्व के बारे में बहुत-सी जानकारी एकत्रित और व्यवस्थित करते हैं तथा वे उनकी देखभाल करने वालों से भी लाभान्वित होते हैं, जो उन्हें बाहर ले जाते हैं तथा रुचिकर घटनाएँ और लोग दिखाते हैं। चंचल शिशु और टॉडलर्स बड़े पैमाने पर अपने खेल में खिलौनों और सीखने की अन्य सामग्री का प्रयोग करते हैं। शिशुओं और टॉडलर्स के साथ वयस्क एक महत्वपूर्ण समाजीकरण की भूमिका निभाते हैं। वयस्कों के साथ प्रगाढ़ सकारात्मक रिश्ते शिशुओं को इस संसार में विश्वास की भावना विकसित करने और क्षमता बढ़ाने में सहायता करते हैं। ये संबंध बच्चों के स्वस्थ आत्मसम्मान के विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। विश्वासपात्र वयस्क एक सुरक्षित आधार बनते हैं जिसके माध्यम से चंचल शिशु अथवा बच्चे आस-पास के परिवेश की जानकारी प्राप्त करते हैं।

एकाकी खेल (0–2 वर्ष) इस आयु में सहज स्थिति है। बच्चे किसी वयस्क अथवा बड़े बच्चे के साथ खेलना पसंद करते हैं परंतु अपने सहजात बालक के साथ अधिक संपर्क नहीं करते।

1. *स्वामीनाथन,* एम. डेनियल, पी. 2000

इन वर्षों के दौरान महत्वपूर्ण कौशल अर्जित किए जाते हैं जिसमें शौच करने, खाने और कपड़े पहनने जैसी व्यक्तिगत देखरेख शामिल है तथा ये सभी महत्वपूर्ण जीवन कौशल के रूप में कार्य करते हैं। इस आयु वर्ग के लिए सर्वाधिक उपयुक्त शिक्षण तकनीक है स्वत: प्रेरित दोहराने की प्रवृत्ति। इसका प्रयोग करने के लिए बच्चों को नई अर्जित कुशलताओं के अभ्यास के लिए तथा स्वायत्तता की भावना का अनुभव कराने के लिए बच्चे को पर्याप्त अवसर प्रदान करना। शिशु अपने खिलौनों को पकड़ते हैं, पटकते हैं, फेंकते हैं और गिराते हैं। धैर्य अत्यंत आवश्यक है क्योंकि टॉडलर्स स्वेटर पहनने की प्रक्रिया के दौरान काफी संघर्ष करते हैं। नकल, लुका-छिपी तथा नाम बताने वाले खेल भी इस आयु में सीखने के लिए महत्वपूर्ण हैं। रियलिस्टिक खिलौने बच्चों को लगातार कठिन प्रकार के खेलों में व्यस्त रखने में समर्थ होते हैं।

दो वर्ष के बच्चे भाषा को बहुत तेज़ी से सीखते हैं। उन्हें साधारण पुस्तकें, तस्वीरें, पहेलियाँ, संगीत तथा सक्रिय खेलों जैसे कूदने, भागने और नाचने के लिए समय एवं स्थान की आवश्यकता होती है। टॉडलर्स सामाजिक कौशल अर्जित करना प्रारंभ कर देते हैं परंतु समूहों में एक जैसे कई खिलौने होने चाहिए। क्योंकि अहम केंद्रित टॉडलर्स मिल-जुलकर रहने की अवधारणा को समझने में समर्थ नहीं होते हैं।

3 से 5 वर्ष के बच्चे

तीन वर्ष के बच्चे बोलना और सुनना पसंद करते हैं परंतु उन्हें कार्यकलाप और संचालन चाहिए होता है जिसमें वे अधिक ज़ोर शारीरिक गतिविधियों को देते हैं। वे नाटकीय खेल, पहिये वाले खिलौनों और चढ़ने वाले उपकरणों, पहेलियों और ब्लॉक वाले खिलौनों को, बात करने, कहानियाँ सुनने को पसंद करते हैं।

चार वर्षीय बालक कई विभिन्न अनुभवों का आनंद उठाते हैं तथा उन्हें छोटे प्रेरक कार्यकलापों जैसे-कैंची वाले खेल, कला, चालबाजी वाले खेल जैसे-पहेलियाँ और खाना बनाने की गतिविधियाँ पसंद हैं। वे एकाग्रता और स्मरण, साथ ही वस्तुओं को उनके आकार, रंग और स्वरूप से पहचानने में अधिक समर्थ होते हैं। चार वर्षीय बच्चों में बुनियादी गणित की अवधारणाएँ और सवाल का उत्तर देने का कौशल विकसित होता है। 3 वर्ष की आयु में बच्चे दो अथवा तीन बच्चों के साथ खेलना पसंद करते हैं। परंतु 4+ वाले बच्चे पाँच से आठ वर्ष वाले समूह के कार्यकलापों में आसानी से भाग लेते और सहयोग करते हैं तथा स्वतंत्र रूप से भी समूह खेलों का संचालन करने व खेलने के लिए तैयार रहते हैं।

कुछ चार वर्षीय बच्चे और अधिकांश पाँच वर्षीय बच्चे अधिक जटिल संबंधों में विचारों को जोड़ते हैं (उदाहरण के लिए अंकों से जुड़ी संकल्पनाएँ जैसे एक संख्या दूसरे से जुड़ी है) तथा उनकी स्मरण क्षमता और उनका शारीरिक कौशल निरंतर बढ़ता हुआ होता है। कुछ चार वर्षीय तथा अधिकांश पाँच वर्षीय बच्चे लिखित भाषा के क्रियात्मक पहलुओं के प्रति बढ़ती रुचि प्रदर्शित करते हैं, जैसे अर्थपूर्ण शब्दों को पहचानना और अपना नाम स्वयं लिखने का प्रयास करना। केवल वर्णमाला, ध्वनियाँ और सुलेखन शैली सिखाने के लिए तैयार किए गए कार्यकलाप इस आयु वर्ग के लिए कम उपयुक्त हैं बल्कि उन्हें समृद्ध सचित्र पुस्तकों का वातावरण प्रदान

करना चाहिए जो उनमें एक अर्थपूर्ण संदर्भ में भाषा का विकास एवं साक्षरता कौशल पैदा करे।

चार से पाँच वर्षीय बच्चे स्वयं, घर और परिवार के तत्काल अनुभव से आगे भी जा सकते हैं। पाँच वर्षीय बच्चे समुदाय तथा उनके बाहर के विश्व में रुचि दर्शाना शुरू कर देते हैं तथा विशेष घटनाओं और यात्राओं का आनंद उठाते हैं।

6 से 8 वर्षीय बच्चे

छह वर्षीय बच्चे सक्रिय होते हैं तथा उनमें मौखिक क्षमता अधिक होती है। ये इन अनुभवों से अवधारणाएँ एवं समस्या का समाधान करने संबंधी कौशल विकसित करते हैं। इस आयु तक के बच्चे नियमों को समझने लगते हैं तथा नियमों वाले बड़े खेल खेलते हैं। प्रतिस्पर्धात्मक और टोली वाले खेल केवल इसी अवस्था में खेले जा सकते हैं। अधिकांश छह वर्षीय, सात वर्षीय और आठ वर्षीय बच्चे शारीरिक दृष्टि की तुलना में मानसिक दृष्टि से अधिक परिपक्व होते हैं। अत: यंत्रवत कुर्सी पर बैठकर थकाने वाले कार्य की तुलना में इस आयु वर्ग के बच्चों के लिए सरल गतिविधियाँ और प्रयोग अधिक उपयुक्त हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि सात वर्षीय बच्चों को अर्जित अनेक नए शारीरिक और समझपरक कौशलों को सीखने और उनका अभ्यास करने में समय की आवश्यकता होती है। वे कारण पूछने, अन्य लोगों को सुनने तथा सामाजिक लेन-देन दर्शाने में पर्याप्त रूप से समर्थ बन जाते हैं।

आठ वर्षीय बच्चों में बढ़ी हुई सामाजिक रुचि के साथ अत्यधिक उत्सुकता भी होती है। अब वे दूसरे के बारे में तथा दूरवर्ती लोगों के विषय में जानने के योग्य होते हैं। पहली, दूसरी और तीसरी कक्षा के दौरान बच्चे पुस्तकें पढ़ने तथा कहानियाँ सुनने के सांकेतिक अनुभवों से सीख सकते हैं। तथापि वे क्या पढ़ते हैं, इसके बारे में उनकी समझ उनकी इस योग्यता पर निर्भर करती है कि वे लिखित शब्दों को अपने स्वयं के अनुभवों से किस प्रकार जोड़ते हैं। प्राथमिक कक्षा के बच्चे भी अपने स्वयं के अनुभवों और कल्पनाओं को लिखित भाषा में, किसी से लिखकर या स्वयं लिखकर संप्रेषण सीखते हैं। यही बात अँकों से जुड़ी संकल्पनाओं के विकास के संबंध में भी सत्य है। बच्चे की गणित संबंधी संकल्पनाएँ खेलों के दौरान तथा वास्तविक जीवन के अनुभवों से उनके स्वयं के विचारों से विकसित होती हैं जिनमें भोजन बनाना अथवा लकड़ी का कार्य जैसी योग्यता शामिल है।

(स) बच्चों के सीखने की आवश्यकताओं की प्रकृति

बच्चे को विकासात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने के उद्देश्य से निम्नलिखित प्रकार के अनुभवों की आवश्यकता होती है–

निम्न के माध्यम से वयस्कों के अनावश्यक प्रतिबंधों से आज़ादी

- अन्वेषण
- प्रयोग
- प्रोत्साहन
- चुनौती

निम्न के माध्यम से व्यक्ति विशेष के लिए उपलब्धि की प्रसन्नता

- अवसर
- मार्गदर्शन

- सहायता
- सुरक्षा एवं संरक्षा

निम्न के माध्यम से किसी समूह का सदस्य बनने का अनुकूलन

- सहयोग करने
- सुनने
- साझा करने
- सहानुभूति दर्शाने

1.3 नवजातों और शिशुओं के लिए पाठ्यचर्या (0-2+)[2]

दिए गए संदर्भ इस बात पर निर्भर करते हैं कि बच्चा घर में है अथवा किसी संस्थागत ढाँचे में। यदि वह घर में है तो परिवार में देखभाल करने वालों को विभिन्न साधनों द्वारा मार्गदर्शन की आवश्यकता होगी। यदि वह किसी संस्थागत ढाँचे में है, तो प्रशिक्षण के महत्त्व को पुनः दोहराया जाना आवश्यक है।

छोटे बच्चे बहुत जल्दी चिंतित और अधीर हो जाते हैं। उन्हें अधिक संवेदनशील और प्रतिक्रियाशील वातावरण की आवश्यकता होती है तथा उन्हें बेहतर वातावरण प्रदान करने के लिए अधिक वयस्कों और कम बालकों के अनुपात की आवश्यकता है।

बहुत छोटे बच्चों के लिए ई.सी.सी.ई. के परिवेश को रंग-बिरंगा होने की आवश्यकता है तथा उनमें संचालन युक्त वस्तुओं और आगे-पीछे हिलने वाले खिलौने की भरमार होनी चाहिए जो नवजातों और शिशुओं को आकर्षित करते हैं तथा उनमें जहाँ आवश्यक हो सतर्क पर्यवेक्षण एवं हस्तक्षेप भी होना चाहिए। उत्साही और प्रतिक्रियाशील लोग वयस्क-बच्चे के बीच निर्भर संबंधों को बनाने के लिए विश्वास और सहायता उपलब्ध करा सकते हैं। बच्चे संवेदनशील क्रियाकलापों द्वारा दूसरों से संबंध बनाना सीखते हैं जो संकल्पना तैयार करने का आधार उपलब्ध कराता है। नवजात और शिशु अपने स्वयं के अनुभव से प्रयोग और गलतियों, दोहराव, नकल तथा पहचान करना सीखते हैं। तीन वर्ष से कम के बच्चों के लिए उपयुक्त कार्यक्रम में खेल, सक्रिय अन्वेषण और संचालन होना चाहिए जो कि दिनचर्या के विश्वसनीय ढाँचे के भीतर हो और उन्हें अत्यधिक तनाव से सुरक्षा दे। बच्चे के अनुभवों की गुणवत्ता के लिए अन्य लोगों के साथ संबंधों का महत्वपूर्ण और आवश्यक योगदान है।

सभी शिशु विशिष्ट हैं और उनकी आवश्यकताएँ और परिस्थितियाँ पल-पल में बदलती रहती हैं। वयस्कों को शिशुओं के बदलते हुए संकेतों के प्रति संवेदनशीलता से व्यवहार करना चाहिए। देखरेख में निरंतरता और सुसंगतता महत्वपूर्ण है। वयस्कों के कार्यक्रम शिशुओं की दिनचर्या के अनुकूल होने चाहिए। शिशु की इच्छा पर ही पकड़ना और छूना जैसी क्रियाओं का निधारण होना चाहिए।

घरों के भीतर माताएँ शिशु की मालिश करती हैं, शिशुओं को लोरियाँ सुनाती हैं और शिशु के साथ खेलती हैं जो उन्हें परिचित चेहरे और अजनबी में विभेद करने के लिए उत्प्रेरित करता है। यह ऐसा कार्य है जो बच्चा समय के साथ सीखता जाता है, जब वह नौ माह का होता है तो पूरी तरह इसमें निपुण हो जाता है।

प्रथम वर्ष के अंतिम भाग के दौरान बच्चा भाषायी ध्वनियों की प्रारंभिक अवस्था को तेज़ी से सीखना प्रारंभ करता है तथा उसे भाषायी

2. *स्वामीनाथन,* एम. 1989

वातावरण से पुनः सहयोग की आवश्यकता होती है। शिशुओं को पकड़ना चाहिए, उनसे बोलना चाहिए, उन्हें झुलाना चाहिए तथा उन्हें गले से लगाना चाहिए। यह शारीरिक गतिविधियों के लिए प्रेरित करता है। शिशु को यह पता चलता है कि छोटे-छोटे अंतराल के बाद लोग और वस्तुएँ उसके पास मौजूद रहती हैं। ऐसी खेल गतिविधियाँ सकारात्मक प्रेम संबंधों, प्रेरणा, अन्वेषण और प्रयोग को जन्म देती हैं।

शिशुओं की देखरेख करने वालों, चाहे वे घर में हों या संस्था में, उनके लिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि दैनिक और प्रतिक्रियाशील, दोनों ही क्रियाकलाप शिशु के प्रतिदिन के अनुभव के लिए आवश्यक हैं। शिशु के पास दृश्य के माध्यम से प्रेरित करने वाली वस्तुएँ, पकड़ने वाली तथा उसे संचालन युक्त वस्तुएँ अवश्य होनी चाहिए। गोद में रहने वाले बच्चों को भी घुमाना और दिखाना आवश्यक है ताकि वह अन्वेषण के महत्त्व से परिचित हो सकें।

उन्हें भोजन नियमित अंतराल पर देना चाहिए तथा उनके स्वास्थ्य की देखरेख संबंधी पद्धतियों और सोने की अवधि को सावधानीपूर्वक पूरा किया जाना चाहिए।

जीवन के दूसरे वर्ष में, शिशु लोगों को पहचानने में समर्थ होता है और भाषा की दिशा में कदम रखता है। बातचीत, तस्वीरों वाली पुस्तकें और वस्तुएँ शिशु के परिवेश का आवश्यक हिस्सा हैं। घर से बाहर का खेल और वो भी अपने अन्य साथियों के साथ, जिज्ञासा और इच्छा शक्ति विकसित करता है।

दो वर्षीय बच्चे का रेत में खेल, गेंद के साथ खेल और भरने तथा खाली करने के खेलों के साथ उनके अनुभवों की आवश्यकता होती है।

वयस्क इस सीखने की प्रक्रिया को मार्गदर्शन तथा सहायता देते हैं। साथ ही यह सुनिश्चित करते हैं कि वातावरण सुरक्षित और संवेदनशील रूप से सहयोगी है। तीन वर्ष से नीचे वालों की देखभाल और पालन-पोषण के लिए वयस्क-बच्चे के संपर्कों को भाषायी दृष्टि से मज़बूत होना चाहिए। रसोई में माँ के पास बैठा हुआ बच्चा, जो बरतनों और तवे-कड़ाही से खेल रहा है, जबकि उसकी माँ भोजन पका रही है, दोनों ही एक संवेदनशील रूप से सुरक्षित वातावरण में सक्रिय रूप से कार्य कर रहे होते हैं। डे-केयर तथा अन्य सांस्थानिक व्यवस्थाओं में वस्तुओं को रखने की योजना सावधानीपूर्वक बनाई जानी चाहिए। किसी परिचित वयस्क के साथ संबंधों का महत्त्व तीन वर्ष से कम वालों के लिए मार्गदर्शी सिद्धांत है।

1.4 3-5+ वर्ष के बच्चों के लिए पाठ्यचर्या रूपरेखा

पाठ्यचर्या कक्षा में घटित होने वाली उन समस्त गतिविधियों का एक सकल योग है और उसकी विषय-वस्तु बच्चे के समग्र नैसर्गिक और सामाजिक जगत से ली जाती है। शिक्षक द्वारा अपनाई जाने वाली कार्यनीतियाँ और पद्धतियाँ मूलभूत सिद्धांतों में से ली जानी चाहिए तथा बच्चे की आयु के अनुसार उसका अनुकूलन किया जाना चाहिए।

1.4.1 सीखने के आधार के रूप में खेल

अधिकांश ई.सी.सी.ई. चिंतकों ने किसी-न-किसी रूप में बच्चे की सीखने की प्रक्रिया के संबंध में खेल को केंद्र में रखने का उल्लेख किया है। इसका कारण है कि खेल बच्चे के लिए

प्राकृतिक, स्वत: स्फूर्त, आकर्षक, आनंददायक और लाभप्रद है। इसे खुद ही शुरू कर सकते हैं। इसके सीखने के परिणामों के कारण बच्चे खेल में शामिल नहीं होते, फिर भी यह देखा गया है कि खेल विकास के प्रत्येक क्षेत्र में वृद्धि और विकास को बढ़ावा देते हैं[3]। उदाहरण के लिए, यह जिज्ञासा और अन्वेषण को प्रेरित करता है, शारीरिक नियंत्रण, सृजनात्मकता, सामाजिक कौशल, भावात्मक संतुलन और भाषायी कौशल पर दक्षता प्रदान करता है। तथापि, सभी स्तरों पर अभिभावक प्राय: खेल को समय की बरबादी मानते हुए और इसे सीखने के विपरीत अर्थ में लेते हैं, अत: "खेल आधारित पाठ्यक्रम" के स्थान पर कभी-कभी "कार्यकलाप आधारित पाठ्यक्रम" को वरीयता दी जाती है।

ई.सी.सी.ई. की बनावट को विभिन्न वस्तुओं जैसे गेंद, रेत, झूले, आगे-पीछे हिलने वाले आकर्षित करने वाले खिलौने के साथ खेले जाने वाले खेलों की निरीक्षण व्यवस्था करनी चाहिए। खेल का क्षेत्र अन्वेषण तथा शारीरिक क्षमताओं पर दक्षता हासिल करने के लिए उपयुक्त होना चाहिए। जंगल जिम, भ्रमण और स्थान संतुलन बच्चों में विश्वास पैदा करने में सहायक होंगे। तीन से पाँच साल के बच्चों के लिए दौड़ने, कूदने, संतुलन बनाने की गतिविधि आवश्यक है। स्वतंत्र खेल घर के भीतर तथा घर के बाहर दोनों ही प्रकार के होने चाहिए। घर के बाहर के खेल अनेक प्रेरक कौशलों के लिए अधिक लाभदायक होते हैं जबकि घर के भीतर स्वतंत्र खेल मुख्यत: छोटे शारीरिक कौशलों से जुड़े होते हैं जैसे, मनके चुनना, पेग बोर्ड, पहेलियाँ। यांत्रिक खिलौने भी कौशल में वृद्धि करने में सहायक होते हैं। घर के भीतर के स्वतंत्र खेलों में छोटे समूहों में खेले जाने वाले खेलों जैसे पहेलियाँ, नाटक अथवा अनुकरण के खेलों को समय प्रदान किया जाता है।

खेल के अंतर्गत रेखाएँ खींचना, रंगों से खेलना और कभी-कभी वस्तुओं को मिलाना और जोड़े बनाना भी शामिल हो सकते हैं। कार्यशीटों के अंतर्गत परिचित वस्तुओं को मिलाना, कभी-कभार रेखांकित चित्र में रंग भरना आदि गतिविधियाँ भी महत्वपूर्ण हैं। कभी-कभी बच्चे खेल में जोड़े बनाने, एक समान जोड़े एकत्रित करने में प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। इन सभी गतिविधियों को स्वतंत्र चित्रकला के अवसर के साथ संतुलित किया जाना चाहिए जहाँ रंग अभिव्यक्ति का माध्यम हों।

1.4.2 शिक्षा के लिए आधार के रूप में कला

ई.सी.सी.ई. रुचि पैदा करने का और सीखने की प्रवृत्ति का आधार तैयार कर रहा है। ऐसे में कला को अनेक रूपों में इस्तेमाल करके अभिव्यक्ति और समझ के आनंददायक संदर्भ उत्पन्न किए जा सकते हैं। कला बच्चों की रुचि का अभिन्न अंग है और बच्चे की प्रतिक्रियाओं के प्रवाह को नैसर्गिक रूप से जागृत करने की क्षमता रखती है। समय के विभाजन में बच्चों को इस बात की छूट देनी चाहिए कि वे घूमने-फिरने के लिए अपनी इच्छा को जान सकें। संगीत और कला के माध्यम से सौंदर्य का अनुभव दैनिक जीवन का एक भाग बन सकता है। उदाहरण के लिए, दिन की शुरुआत गीतों, सामूहिक संचलनों और शारीरिक कसरत के साथ करना। हर दिन एक निश्चित

3. *पियाजे,* 1952

समय "गीत का समय" होना चाहिए, इस समय में बच्चे गीतों और धुनों को दोहरा सकें।

बच्चे के अवलोकन और वातावरण को देखने-समझने को तेज़ बनाने में सृजनात्मक नाटक विशेष रूप से एक समर्थकारी अनुभव है। नाटक को कक्षा संसाधन के रूप में विभिन्न तरीकों से प्रारंभ किया जा सकता है। जैसे, एक गुड़िया घर बनाकर जहाँ बच्चों को उनकी परिचित गुड़िया ढूँढ़कर लेनी पड़े, और चाहे वे व्यक्ति ढूँढ़ने पड़ें जिनके साथ वे रहते हैं। नाटक एक ओर फैंटेसी है तो साथ ही यह स्कूल के बाहर उनके जीवन के सामाजिक रूप से संवेदनशील क्षेत्रों के प्रति सूक्ष्म दृष्टि प्रदान करता है। बच्चों को पुरानी वस्तुएँ (जैसे सैंडिलें, पुराने चश्मे, बटुए, थैले, दुपट्टे, छड़ी और अन्य सुरक्षित वस्तुएँ) खेलने के लिए उपलब्ध होनी चाहिए। जहाँ वे खेलें और वयस्कों के वातावरण में जाकर उनका अभिनय या नकल करें जिससे उन्हें "अन्य" बनने की खुशी प्राप्त होगी। ऐसे अवसर बच्चे में जिज्ञासा, विश्वास और प्रफुल्लता पैदा करने वाले अनुभव बन जाते हैं।

यदि संभव हो, तो बच्चे के लिए स्थानीय कलाकार उपलब्ध होने चाहिए। कलाकारों के साथ काम करना कार्य और कला के विश्व में झाँकने का अवसर प्रदान करता है। छोटे बच्चों के अध्यापक भी बच्चों के साथ दैनिक व्यवहार करने में कला का प्रयोग करने में दक्ष होने चाहिए।

1.4.3 बच्चे की सोच के विशिष्ट लक्षणों को मान्यता देना

ई.सी.सी.ई. पाठ्यचर्या स्कूली शिक्षा के बाद के वर्षों में बच्चे की रुचि और प्रदर्शन पर प्रमुख प्रभाव डालती है। बच्चे में उसके चारों ओर के विश्व के बारे में समझने और सीखने की नैसर्गिक इच्छा और क्षमता होती है। बच्चे लोगों तथा वस्तुओं के संपर्क द्वारा अपने बारे में, दूसरों के बारे में और इस वातावरण के बारे में अवधारणाएँ विकसित करते हैं। साथ ही जटिल समस्याओं के समाधान भी खोजते हैं। वे गणित / विज्ञान को बरतन खाली करने, रेत से कप भरकर, मनके गिनकर, नाश्ते के लिए प्लेटें बाँटने के ज़रिए सीखते हैं। वे वस्तुओं को छाँटने में, वस्तुओं को कम होते हुए अथवा बढ़ते हुए क्रम में लगाकर आनंद प्राप्त करते हैं। वे पौधों को बढ़ता हुआ देखकर पर्यावरण में हो रहे परिवर्तनों के बारे में सीखते हैं। ई.सी.सी.ई. के शिक्षक को बातचीत के माध्यम से और विश्वास के वातावरण के सहारे बच्चों का ध्यान ऐसे कार्यों की ओर आकर्षित करना चाहिए जिससे बच्चे बातचीत करना, स्वयं को अभिव्यक्त करना और समझना सीख सकें। कहानियाँ सुनाना, बच्चों से उनकी पसंद और नापसंद, भावनाओं के बारे में पूछना बच्चों के अर्थ निर्माण की प्रक्रिया के उदाहरण हैं। ऐसी गतिविधियाँ बच्चे को बढ़ने तथा उनकी सीखने की प्रक्रिया पर विचार करने में सहायता प्रदान करती हैं। ई.सी.सी.ई. के शिक्षकों को बच्चे को सीखने की नैसर्गिक क्षमता को प्रोत्साहित करना चाहिए। यह बच्चों के आत्मविश्वास को हासिल करने और शिक्षा के अगले चरण में रुचि पैदा करने में सहायक होता है।

1.4.4 विषय-वस्तु (मूलभूत साक्षरता और अंक ज्ञान) और संस्कृति का मिश्रण

खेल आधारित पाठ्यक्रम के बारे में प्राय: की जाने वाली शिकायतों में से एक यह है कि पढ़ने,

लिखने एवं अंकगणित के शिक्षण पर बल नहीं दिया जाता है। इस अवस्था में बाल मस्तिष्कों को अमूर्त बातों से लादना उचित नहीं होगा। फिर भी अधिक मात्रा में शब्दावली को सीखना, जैसे भारी-हल्का, ज़्यादा-कम, थोड़ा-अधिक आदि और गतिविधियों द्वारा अंतर पहचानना अँकों को जानने से पहले की अवधारणा को स्पष्ट करेगा। बार-बार सफलता का अनुभव बच्चे में आत्मविश्वास पैदा करता है जबकि बार-बार की असफलता बच्चे को हीनभावना की ओर ले जाती है। बच्चे यह धारणा खेलों, कार्यशीटों तथा अन्य इंद्रीगत संसाधनों जैसे वस्तुओं के साथ खेलना अथवा नाटक में हिस्सा लेने के माध्यम से ग्रहण करते हैं। पूर्व-साक्षरता का अर्थ है-आकृतियों एवं आकारों के साथ खेलना, शारीरिक क्रियाकलापों पर दक्षता प्राप्त करने के लिए प्रेरक कौशल को सीखना। कला से संबंधित क्रियाकलाप पूर्व-साक्षरता कार्यों के मुद्दों के साथ जुड़े होते हैं।

बच्चों को अनेक क्रियाकलापों की आवश्यकता होती है जो उन्हें नामों से परिचित कराने, ध्वनियों और शब्दों को पहचानने में सहायता करें। कहानियाँ, कविताएँ सुनने, क्षेत्रीय भ्रमणों पर जाना, चार्टों को देखना, ये सभी सीखने और लिखने में रुचि पैदा करने के आधार हैं।

1.4.5 औपचारिक तथा अनौपचारिक क्रियाओं का मिश्रण

बैठने वाले और क्रियाकलापों से भरे परिपूर्ण खेल छोटे बच्चों में व्याप्त अधीरता और सक्रिय मनोवृत्ति के सही दिशा में प्रवाह करने में सहायक होते हैं। बच्चों में सुरक्षा की भावना होनी चाहिए तथा वे पहचान खोने के भय के बिना स्वयं को अभिव्यक्त करने में समर्थ होने चाहिए। बच्चे द्वारा घनिष्ठता का अनुभव करने पर ही सुरक्षा संभव है। "शैक्षणिक स्थानों को व्यक्तिगत बना लेना" (अथवा बच्चों को कक्षा में घर जैसा वातावरण महसूस कराना) छोटे बच्चों के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। एक विशेष समय निर्धारित किया जा सकता है जिसमें बच्चों को उनकी प्राथमिकताओं और पसंदों अथवा विशेष अर्थ वाली घटनाओं के बारे में बात करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। यदि बच्चे छोटे-छोटे समूहों में कार्य करें और एक बड़ी सामूहिक गतिविधि में शामिल होने के लिए एकत्र हों तो कक्षा का एक विशेष अर्थ होता है। कक्षा को इस प्रकार व्यवस्थित करने की आवश्यकता है, जहाँ छोटे समूह क्षेत्र तथा साथ ही समूचे समूह के लिए "बड़े सर्किल टाइम" की व्यवस्था हो सके। बच्चे आपस में मिलकर विचार-विमर्श कर सकें। कोई बच्चा अकेले ही कुछ काम करने की इच्छा रखता हो तो उसको ऐसा करने के लिए स्थान और स्वतंत्रता होनी चाहिए।

1.4.6 दैनिक सामंजस्य में घनिष्ठता और चुनौती

बच्चों को गानों, कहानियों और गतिविधियों के दोहराव की आवश्यकता होती है। प्रारंभिक वर्षों के दौरान दोहराव सीखने का एक अनिवार्य तरीका है। यह बालक को सुरक्षा की भावना प्रदान करता है। परंतु दिनचर्या कठोर नहीं होनी चाहिए। वह लचीली होनी चाहिए, बच्चों के सुझावों के अनुसार खुली होनी चाहिए, उनमें अप्रत्याशित घटनाएँ जैसे किसी अतिथि का आगमन अथवा किसी उत्सव का मनाया जाना भी शामिल होना चाहिए। वे

बच्चे के ध्यान की बदलती हुई अवधि तथा मन की स्थिति के परिवर्तनों के अनुसार होनी चाहिए। चुनौती का सामना करने के लिए विविधता भी ज़रूरी है।

1.4.7 विशेषज्ञता के स्थान पर अनुभव को प्राथमिकता

बच्चों के लिए ई.सी.सी.ई. की कक्षाएँ जीवंत और व्यवस्थित होनी चाहिए ताकि बच्चे बौद्धिक रूप से जागरूक रहें। हम जो भी योगदान देते हैं उसमें हमेशा यह डर बना रहता है कि बच्चे काम को पूरा कर सकेंगे या नहीं, यह सच है कि हम बच्चों को कढ़ाई करने के लिए नहीं कह सकते हैं लेकिन बच्चे कढ़ाई में मौजूद विविध बुनावटों को देखकर कुछ-न-कुछ ज़रूर सीख सकते हैं। बच्चों को कई भिन्न प्रकार की गतिविधियों जैसे गाने, संगीत, विभिन्न लोगों की पोशाक के बारे में जानकारी की विभिन्नता की जानकारी, खान-पान की आदतें, उत्सव मनाना आदि के अनुभव की आवश्यकता होती है। बहुसंस्कृति वाले संदर्भ में सामाजिक विभिन्नता की जानकारी धैर्य और शांति की प्रवृत्ति को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एक बहुभाषीय कक्षा इस संबंध में एक बेहतरीन स्रोत है और इसका प्रयोग अध्यापक द्वारा किया जाना चाहिए।

1.4.8 स्थानीय सामग्री, कला और ज्ञान का प्रयोग

किसी ई.सी.सी.ई. शिक्षक के लिए ज़मीन से पत्तियाँ, कंकड़ और फूलों की पंखुड़ियाँ उठाना और उनका उपयोग, उनके रंग, आकृति और आकार के अनुसार करवाना सर्वाधिक आसान काम है। रंगोली, कोलम, अल्पना विभिन्न राज्यों में प्रचलित जमीन पर बनने वाली कलाएँ हैं और इन सामग्री का सृजनात्मक रूप से प्रयोग करने में बच्चों की सहायता करनी चाहिए। स्थानीय भाषाओं में सामान्य वस्तुओं के लिए विभिन्न नाम होते हैं। विभिन्न भाषाओं के स्वर-स्तरों के बारे में जानने के माध्यम से ऐसी जानकारी सहनशीलता की भावना का विकास करती है। ग्रामीण क्षेत्रों तथा महानगरीय दोनों संदर्भों में, बच्चे स्थानीय कलाओं, कहानियों, लोक कथाओं, गीतों और भाषायी विभिन्नता में जानकारी प्राप्त करके बहुत कुछ हासिल कर सकते हैं। उनकी सहभागिता ई.सी.सी.ई. की बनावट को समुदाय का विस्तार बनाती है। इस प्रकार के अनुभव लोगों की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के बारे में बच्चों की सामाजिक क्षमता और जागरुकता में वृद्धि करते हैं। साथ ही, ग्रामीण क्षेत्रों के पूर्व-स्कूलों के बच्चों को रंगों और लोकप्रिय गीतों जैसे समसामयिक सामग्रियों के प्रयोग के अवसरों से वंचित नहीं किया जाना चाहिए।

1.4.9 विकासात्मक दृष्टि से उपयुक्त व्यवहार

उपयुक्त व्यवहार के लिए आवश्यक है कि वे शारीरिक, सामाजिक, संवदेनशील, समझपूर्ण विकास के सभी क्षेत्रों को समाहित करें। व्यवहार भाषायी दृष्टि से परिपूर्ण हो, आयु से जुड़ा और व्यक्ति विशेष के लिए उपयुक्त हो साथ ही संदर्भ के अनुसार अर्थपूर्ण भी हो। अतः सीखने संबंधी गतिविधियाँ बच्चों के जीवन के अनुसार ठोस, यथार्थवादी और प्रासंगिक होनी चाहिए। सीखना एक पारस्परिक प्रक्रिया है। संगठन बहुसांस्कृतिक, जेंडर, जाति/नस्ल के संदर्भों के

प्रति संवेदनशील होने चाहिए। लचीला दृष्टिकोण एक बहुलतावादी और संदर्भ विशिष्ट पाठ्यचर्या मॉडलों का मार्ग प्रशस्त करता है जिसमें हमारे देश की व्यापक सामाजिक, सांस्कृतिक, पारिस्थितिकीय, आर्थिक और भाषायी विविधता प्रकट होती है। सबसे ऊपर, पाठ्यचर्या को शिक्षक द्वारा व्यवहार में लाना होता है और उसकी भूमिका तथा मार्गदर्शन के महत्त्व को कम करके नहीं आका जा सकता है[4]।

1.4.10 स्वास्थ्य, कल्याण और स्वास्थ्य संबंधी आदतें

ई.सी.सी.ई. की स्थापनाएँ बच्चे को दाँत-नाखून साफ़ करना, कानों के पीछे की सफ़ाई और अन्य प्रकार के जीवन कौशल सीखने की ओर प्रेरित करती हैं। ये खराब स्वास्थ्य के संकेतकों तथा कतिपय व्यवहारों से बचने के बारे में जानकारी भी देती हैं। तीन से आठ वर्ष के बच्चे आदतें विकसित करने की प्रक्रिया में होते हैं। उचित आदतें सीखना बच्चे में स्व-देखरेख, स्वच्छ रहन-सहन की रुचि को पैदा करती हैं तथा उनमें स्व-निगरानी की क्षमताओं का विकास करती हैं।

दोपहर का भोजन बच्चे को न सिर्फ़ पोषण प्राप्त करने का अवसर देता है बल्कि इससे भी ज़रूरी साथ बैठने, भोजन बाँटकर खाने तथा एक सुखद वातावरण में भोजन करने का मौका भी उपलब्ध कराता है। चाहे भोजन "मिड-डे-मील" योजना के तहत दिया गया हो, साझे तौर पर बनाया गया हो या फिर बच्चे घर से खाना लाते हों, यह सामाजिक तौर-तरीकों को समझने और समझ विकसित करने तथा भाषा सीखने के लिए एक अनूठा अवसर प्रदान करता है। एक ओर पौधों, सब्ज़ियों, मसालों, स्वादों आदि के नाम चर्चा का विषय हो सकते हैं। दूसरी ओर पसंद में अंतर जैसे विषयों पर भी बच्चों से विचार-विमर्श किया जा सकता है। देखभाल और आपस में बाँटने की सामाजिक सीख और सामाजिक बाधाओं से पार पाना एक साथ बैठने के ज़रिए आता है जो काफी महत्वपूर्ण है।

1.5 3-5+ वर्ष के बच्चों से संबंधित अन्य मुद्दे

1.5.1 अभिभावक और समुदाय

अभिभावकों को ई.सी.सी.ई. के कार्यक्रम की दिनचर्या से परिचित होना चाहिए। बच्चे की प्रगति तथा दैनिक सामंजस्य के बारे में अभिभावक-शिक्षक बैठकों अथवा घर-घर जाने के माध्यम से जाना जा सकता है। अभिभावकों के लिए विशेष समय निर्धारित किया जाना चाहिए ताकि वे अपने बच्चों की कक्षा की दिनचर्या के बारे में जान सकें। ई.सी.सी.ई. केंद्रों को बच्चों की रुचियों और पसंदों के बारे में उनके अभिभावकों की सहभागिता सुनिश्चित करनी चाहिए तथा समुदाय एवं समुदाय के नेताओं से घनिष्ठता बनानी चाहिए। यह केंद्र के लिए सामुदायिक समर्थन और बच्चे के विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

1.5.2 वयस्क और बच्चे के बीच व्यवहार

- व्यवहार सचेत, प्रतिक्रियाशील और आदेश के स्थान पर मार्गदर्शन रूप में हो।
- बच्चों के विचारों को सामने रखने के लिए बातचीत तथा प्रोत्साहन के माध्यम से उन्हें अभिव्यक्ति की अनुमति देता हो।

4. वायगोत्सकी, 1985

- कार्यों को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए सहायता प्रदान करना। बच्चों के आपसी व्यवहार और संप्रेषण के तरीकों द्वारा उनमें आत्म-सम्मान का निर्माण करने वाला हो।
- बच्चे को स्वीकारना, सम्मान करना और उन्हें आराम पहुँचाना स्व-अवधारणा के लिए महत्वपूर्ण है।

1.5.3 मूल्यांकन

निरंतर और संगतपूर्ण निगरानी के द्वारा बच्चों की प्रगति पर सावधानीपूर्वक नज़र रखे जाने की ज़रूरत होती है। इसके लिए कोई संख्यात्मक मूल्यांकन अथवा स्तरीकृत परीक्षा की सिफ़ारिश नहीं की गई है। वस्तुत: इसकी मनाही है। प्रारंभिक वर्षों में सीखने की उच्चतर कक्षाओं में जाने के लिए बच्चों की परीक्षा नहीं ली जानी चाहिए अथवा मौखिक साक्षात्कार नहीं लिया जाना चाहिए।

शिक्षक कक्षा की दिनचर्या में बच्चे की सहभागिता के बारे में, दूसरे बच्चों तथा वयस्कों के साथ व्यवहार में उनकी योग्यता के बारे में अपना रिकॉर्ड दर्ज़ कर सकते हैं। विकास के प्रमुख क्षेत्रों में बच्चे की प्रगति का रिकॉर्ड रखने के लिए व्यवहार और कौशल के परीक्षण की एक जाँच-सूची / चेकलिस्ट तैयार की जाए।

1.5.4 कक्षा में भाषा

ई.सी.सी.ई. की बनावट में संपर्क और संप्रेषण की भाषा मातृभाषा सामान्यतया बच्चे की "प्रथम" भाषा होगी। यह स्वाभाविक है क्योंकि छोटे बच्चे अपनी परिचित भाषा में ही अवधारणाओं को ग्रहण करने और स्वयं को व्यक्त करने में समर्थ होते हैं। अधिकांश मामलों में, कक्षा एक से आगे तक शिक्षण का माध्यम यह क्षेत्रीय भाषा अथवा स्कूली भाषा हो सकती है। यदि समूह में ऐसे बच्चे हैं जो विभिन्न भाषायी पृष्ठभूमि से आए हैं, अथवा जो एक भाषा के अतिरिक्त दूसरी भाषा से परिचित हैं, या जो एक भाषा बोल सकते हैं परंतु दूसरी भाषा केवल समझ सकते हैं, तो ये वर्ष बच्चों को एक से अधिक भाषाएँ समझने (अथवा प्रयोग करने) में सहायता प्रदान करने का सर्वश्रेष्ठ समय है। साथ ही धीरे-धीरे वे अपने आपको उस भाषा में भी ढाल लेते हैं जो बाद में उनके शिक्षण का माध्यम होगी। ऐसे बच्चों को समृद्ध भाषायी वातावरण प्रदान करके, बच्चों को अपनी भाषा में बात करने के लिए प्रोत्साहित करके एक दूसरे की भाषा सीख कर किया जा सकता है। वे छोटे समूहों में आपस में खेलकर एक दूसरे की भाषा के शब्द आसानी से ग्रहण कर सकते हैं। यह अन्य भाषाओं के प्रति सम्मान तथा सहनशीलता का विकास करता है।

यदि शिक्षक एक से अधिक भाषाएँ जानता है, तो यह सहायक होगा। यदि नहीं, तो उसे कम-से-कम बच्चों से उनकी घर की अलग भाषा में कुछ शब्द सीखने का सार्थक प्रयास करना चहिए, जो बच्चों को विशेष रूप से पहले कुछ माह में सहजता और संवेदनशील सुरक्षा की भावना प्रदान करेगा। चूँकि इस अवसर पर भाषा मुख्यत: मौखिक होती है, भाषा से जुड़ी गतिविधियाँ सुनने और बोलने के रूप में प्रकट होती हैं, तथा इसके पश्चात् लिखने और पढ़ने से पहले की गतिविधियाँ आती हैं। अत: ऐसा करना कठिन नहीं होना चाहिए। जैसे-जैसे साल गुज़रते हैं, शिक्षक को क्षेत्रीय / स्कूल की भाषा में प्रवाह के साथ बोलने के प्रयास करने चाहिए

तथा बच्चों को भी ऐसा ही करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, ताकि वे कक्षा एक में प्रवेश के लिए पूरी तरह तैयार हो सकें। विभिन्न भाषायी वर्ग से संबंधित होना तथा अनेक भाषाएँ जानना, गर्व और हर्ष का विषय होना चाहिए न कि अलग-थलग पड़ने अथवा हीनताबोध का।

यदि अँग्रेज़ी के लिए सामाजिक माँग है और यदि शिक्षक मौखिक अँग्रेज़ी में पूरी तरह तैयार है और विश्वस्त है, तो इसे इस अवस्था पर दूसरी भाषा के रूप में प्रारंभ किया जा सकता है। तथापि, बहुत कुछ शिक्षक की मौखिक अँग्रेज़ी के ज्ञान तथा उनके प्रशिक्षण और जुड़ाव पर निर्भर करता है लेकिन जो इसके लिए तैयार नहीं हैं, इसे उन पर ज़बर्दस्ती थोपा नहीं जाना चाहिए। बच्चों को किसी ऐसी चीज़ के बारे में रटवाना, जिसके बारे में न तो उन्हें और न ही शिक्षकों को पता है। यह ई.सी.सी.ई. की संपूर्ण भावना के विरुद्ध है।

1.5.5 समावेशी शिक्षा

एक समावेशी कक्षा यह सुनिश्चित कराती है कि सभी बच्चों को गतिविधियों में सहभागिता, समूह से सहसंबंध और व्यक्तिगत ध्यान मिलने के लिए ऐसे निर्बाध और सहयोगी अवसर प्राप्त हों जो उनमें विकासात्मक कौशल विकसित करने के लिए आवश्यक हैं। बाल अधिकार के दृष्टिकोण से, राज्य को यह देखना चाहिए कि विकलांगता की वजह से किसी बच्चे को अस्वीकार तो नहीं किया जा रहा है। विकलांग बच्चों को स्कूल अथवा समुदाय के कार्यक्रमों में भाग लेने का अवसर दिया जाए। इसके लिए भारत सरकार ने 1995 में विकलांग व्यक्ति अधिनियम पारित किया है। परंतु, अभी इस संबंध में समझ स्पष्ट नहीं है कि भारतीय संदर्भ में किस प्रकार की शिक्षा कार्य करेगी-विशेष स्कूलों में विशेष शिक्षा, सामान्य स्कूलों में संसाधन केंद्रों के साथ सामान्य शिक्षा अथवा पूर्णत: समावेशी शिक्षा जिसमें विशेष कक्षाएँ कभी-कभी आयोजित हों। कुछ शिक्षाविद् महसूस करते हैं कि विषम और गंभीर रूप से विकलांग बच्चों को कम-से-कम पूर्व प्राथमिक स्तर तक विशेष शिक्षा की आवश्यकता होगी।

भारत में ई.सी.सी.ई. की वास्तविकता पर विचार करते हुए प्रथम चरण के रूप में निम्नलिखित कदम प्रारंभ किए जाने चाहिए –

- मौजूदा ई.सी.सी.ई. कार्यक्रमों की पहुँच विशेष आवश्यकता प्राप्त बच्चों तक होनी चाहिए।
- ई.सी.सी.ई. शिक्षकों के पास ऐसा कौशल होना चाहिए कि वे विशेष आवश्यकता प्राप्त बच्चों को पहचान सकें।
- संदर्भ सेवाएँ आसानी से उपलब्ध कराई जानी चाहिए, और
- ई.सी.सी.ई. केंद्रों के ज़रिए अभिभावक समर्थन कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।

1.6 प्रारंभिक प्राथमिक ग्रेडों में 6-8+ वर्ष के बच्चों के लिए पाठ्यचर्या

इस अवस्था में बच्चों को स्कूल की औपचारिक दिनचर्या से धीरे-धीरे परिचित होने तथा साक्षरता के मूलभूत सिद्धांतों को सीखने (पढ़ने-लिखने), संख्या ज्ञान (गणित की संकल्पनाओं को समझना और उनका प्रयोग तथा सामाजिक और प्राकृतिक वातावरण की व्यवस्थित जानकारी के बारे में सीखने के लिए सहायता की आवश्यकता होती है)। यही कारण है कि यह सुझाव दिया गया है कि पहले ही रेखांकित किए जा चुके बुनियादी

सिद्धांतों को प्राथमिक स्कूल के पहले दो वर्षों की पाठ्यचर्या के निर्माण के समय लागू करना होगा। इससे शिक्षा के विभिन्न चरणों में परिवर्तन को सहायता मिलेगी तथा इसे पाठ्यचर्या निर्माताओं और शिक्षकों द्वारा प्राथमिक स्तर पर किया जाना है। निम्नलिखित सुझाव प्रस्तावित हैं –

शिक्षकों के लिए लक्ष्य

- विकास के सभी क्षेत्रों में ज्ञान और कौशल का विकास करें।
- बच्चों को "कैसे सीखें" के बारे में सिखाएँ।
- सीखने के वैयक्तिक पैटर्न और समय का सम्मान करें।
- वैयक्तिक अंतरों और सीखने की शैलियों को समझें।

कक्षा में परस्पर व्यवहार के लिए रणनीतियाँ (युक्तियाँ)

- मज़बूत अनुभव प्रदान करें।
- आपसी व्यवहार से सिखाएँ।
- सहयोगी शिक्षण को प्रोत्साहन दें।
- एकीकृत शिक्षण को प्रोत्साहित करने के लिए परियोजना पद्धति का प्रयोग करें।
- बच्चों की सक्रिय सहभागिता के लिए कार्य करें।
- भाषा पढ़ाने के लिए नाटकों का प्रयोग करें।

शिक्षक और बच्चों के बीच संबंध

- बच्चों को उनकी भावनाएँ अभिव्यक्त करने का मौका दें।
- उनके संकट और जीत को साझा करें?
- उत्तरदायी वयस्कों की बच्चों तक पहुँच।

अंततः श्रेष्ठ पाठ्यचर्या केवल प्रशिक्षण और संवेदनशील शिक्षकों द्वारा ही व्यवहार में लाई जा सकती है। जन्म से लेकर आठ वर्षों तक ई.सी.सी.ई. की सफलता गाथा बनाने के लिए, नए प्रकार के शिक्षकों की आवश्यकता है, जो व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित हों, तथा बाल विकास के परिप्रेक्ष्य के प्रति विशेष रूप से संवेदनशील हों। इस अवस्था के लिए शिक्षकों की पेशेवर तैयारी, प्रशिक्षण की एक सूझबूझ पूर्ण योजना की माँग करती है जो प्रारंभिक बाल्यावस्था की विकासात्मक माँगों के प्रति प्रासंगिक हो। परंतु यह प्रशिक्षण व्यवस्था आजतक अनियंत्रित है और इसकी अनदेखी की जा रही है।

संदर्भ

1. मीना, स्वामीनाथन. एंड प्रेमा, डेनियल. 2000. *एक्टीविटी बेस्ड डेवलपमेंटली एप्रोप्रिएट करीकुलम फॉर यंग-चिल्ड्रन.* इंडियन एसोसिएशन फॉर प्री-स्कूल एजुकेशन, चेन्नई, कोयम्बटूर, नैवेली.
2. मीना. स्वामीनाथन. 1989. द *फ़र्स्ट थ्री ईयर्स.* ए सोर्स बुक ऑन अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन, यूनेस्को, बैंकाक, पेरिस.
3. पियाजे, जे. 1952. *दि ऑरिजिंस ऑफ इंटेलीजेंस इन चिल्ड्रेन* (अनुवाद एम. कुक). इंटरनेशनल यूनिवर्सिटीज़ प्रेस, न्यूयार्क, सर्वप्रथम प्रकाशित, 1934.
4. वायोगोत्स्की, एल. एस. 1985. *प्ले एंड इट्स रोल इन* द मेंटल डेवलपमेंट *ऑफ़* दि चाइल्ड. *जे.* बर्नर, ए. जोली और के. सयल्वा द्वारा संपादित - *प्ले– इट्स रोल इन डवलपमेंट एंड इवोल्यूशन* में, न्यूयार्क, बेसिक बुक्स, पृ. 59 7-608.